नया इंडिया
16/11/17

अध्यात्म हमारे देश की आत्मा है : रामनाथ कोविंद

रांची ■ संवाद सूत्र

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडिया के द्वारा पूरे विश्व में निरंतर योगदान के सौ वर्ष पूरे होने पर मैं इस सोसाइटी और परमहंस योगानंद के विचारों से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को बधाई देता हूं। इन सौ वर्षों में योगदा सत्संग सोसाइटी ने पूरे विश्व में भारत के योग विज्ञान को प्रसारित करने में सराहनीय योगदान दिया है। इस शताब्दी वर्ष में गीता पर परमहंस जी की टीका के हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन समयानुकूल है और उपयोगी भी। सन 1995 में मूल अंग्रेजी टीका का प्रकाशन हुआ था। अब तक स्पैनिश, जर्मन, इटालियन और पुर्तगाली भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध थे। आज इस हिन्दी अनुवाद के प्रकाशन द्वारा एक बहुत बड़े पाठक वर्ग के लिए इस पुस्तक में निहित जीवनोपयोगी ज्ञान सुलभ हो गया है। इस अनुवाद के लिए स्वामी नित्यानंद जी प्रशंसा के पात्र हैं। मैं मानता हूं कि अध्यात्म हमारे देश की आत्मा है जो पूरे विश्व के लिए भारत की एक महत्वपूर्ण देन है। विश्वस्तर पर भारत के अध्यात्म को सम्मानित और लोकप्रिय बनाने का मार्ग स्वामी विवेकानंद और परमहंस योगानंद ने प्रशस्त किया था। एक रोचक ऐतिहासिक संयोग सेए वर्ष 1893 में स्वामी विवेकानंद के शिकागो संबोधन ने भारतीय अध्यात्म के बारे में पश्चिम में जागृति की एक नई लहर पैदा की थी और इसी वर्ष गोरखपुर में परमहंस योगानंद का मुकुंदलाल घोष के नाम से अवतरण हुआ था। यह जानकारी मुझे अभिभूत करती है कि 1918 से 1920 तक रांची के इसी आश्रम को परमहंस योगानंद ने अपनी कर्मस्थली बनाया था। उसके बाद अगले 32 वर्षों तक वे सेल्फ रीलेषन फेलोषिप के माध्यम से अमेरिका में लाखों लोगों को क्रिया योग की शिक्षा से लाभान्वित

करते रहे। इस दौरान सन 1935 में जब वे भारत आए तब भी उन्होंने इस आश्रम को अपनी उपस्थिति से पवित्र किया था। महात्मा गांधी भी सन 1925 में इस आश्रम में आए थे। यहां आना मेरे लिए बहुत खुशी की बात है। परमहंस योगानंद का संदेश अध्यात्म का संदेश है। वह धर्म से परे, सभी धर्मों का सम्मान करने काए विश्व बंधुत्व का नजरिया है। वे मानते थे कि जिस तरह रोशनी, हवा और पानी सबके लिए हैं, उसी तरह ऋषि-मुनियों द्वारा विकसित किया गया भारत का योग विज्ञान भी पूरी मानवता के लिए है। गीता में भारत का यही योग शास्त्र श्रीकृष्ण और अर्जुन के संवाद के रूप में समझाया गया है। अपनी टीका में परमहंस योगानंद ने गीता के मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक पक्ष को स्पष्ट करते हुए मार्गदर्शन प्रदान किया है। हर मनुष्य के अंदर चलने वाले युद्ध को उन्होंने गीता का विषय माना है। परमहंस योगानंद के अनुसार गीता दैनिक जीवन के लिए एक पाठ्य पुस्तक भी है। वे कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को कुरुक्षेत्र की अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी है और इसे जीतना भी है। सही क्या है और गलत क्या है, क्या करें और क्या न करें, यह अंतर्द्वंद्व सबको परेशान करता है। ऐसे दोराहों पर निर्णय लेने में विद्वत्ता की नहीं, बल्कि विवेक की आवश्यकता होती है। सही और गलत के बीच चुनाव करने का यह विवेक गीता में मिलता है। योगदा सत्संग सोसाइटी के प्रांगण में राष्ट्रपति का स्वागत करते हुए योगदा आश्रम के महासचिव स्वामी स्मरानंद गिरी ने कहा कि परमहंस योगानंद ने अपने जीवन शैली, शिक्षा के द्वारा लोगों को संदेश दिया कि योग के माध्यम से व्यक्ति के आंतरिक एवं बाह्य जीवन में परिवर्तन आता है तथा उसे आनंद संतोष एवं सुरक्षा प्राप्त होता है। जिसके लिए आज मानव बेचैन है। उचित कार्य, अच्छा व्यवहार के द्वारा बाह्य जीवन भी सुंदर होता है। उन्होंने कहा कि योग के माध्यम से आत्म साक्षात्कार संभव है। अपने वैज्ञानिक पद्धति के कारण पूरे विश्व में यह स्वीकारा गया है।